वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अप्रैल 2023

- उद्‌भिद जगत के साथ हमारा सम्बन्ध
- हमारे मोक्ष और विकास का मार्ग कैसे खुले?
- सबसे उत्तम काम
- भगवान देवात्मा का कल्याणकारी उपदेश
- पूजनीय भगवान की कलम से एक कहानी .....
- आपका साहित्य मनुष्य के लिए अनुपम वरदान है।
- देवात्मा के दर से क्या पाया?
- मेरे पापों की क्या है गिनती
- पत्नी को श्रद्धांजली
- एक पत्र
- विशेष सत्संग वा पति पत्नी ब्रत

इस अंक में

इस अंक में हम अपने पाठकों के लिए जो पहला लेख दे रहें हैं उसका शीर्षक है उद्‌भिद जगत के साथ हमारा सम्बन्ध दूसरे लेख का शीर्षक है "हमारे मोक्ष और विकास का मार्ग कैसे खुले?" यह एक गम्भीर प्रश्न है, क्योंकि देवात्मा की शरण में आकर एक एक इन्सान का जो हित होता है उसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता, परन्तु फिर भी बहुत सी सूरतों में हमारे मोक्ष और विकास का नियमित मार्ग नहीं खुलता, जिसकी वजह से हमारा पूजनीय भगवान की शरण प्राप्त करना निष्फल जाता रहता है।

हमारी शक्तियां बहुत सीमित हैं। उनकी सर्वोत्तम सफलता देव समाज की सेवा में है। उनको किसी और काम में लाना महा मूर्खता है, चाहे वह पब्लिक सेवा का ही काम हो। मनुष्य मात्र की सबसे महान सेवा यह है कि उनको देवात्मा के देवरूप और देव समाज के साथ जोड़ दिया जाए। भगवान देवात्मा की ज्योति और शक्ति की प्राप्ति के बिना कोई भी जन मानवता की सर्वोत्तम सेवा नहीं कर सकता। ऐसे ही विचारों से भरपूर है हमारा लेख "सबसे उत्तम काम"

भगवान देवात्मा का कल्याणकारी उपदेश और उनकी कलम से निकली हुई धन अनुराग के संबंध में कहानी अति कल्याणकारी है। देवात्मा के दर से पाए उपकारों का एक उपकृत सेवक द्वारा वर्णन है, जो देवात्मा के जीवित प्रभावों का साक्षी है।

उसके बाद कुछ अन्य धर्म सम्बन्धियों के भावों का प्रकाश है, जो लिखकर भेजने की कृपा करते हैं। कुछ दानियों की लिस्ट है, जिन्होंने बहुत कृपा करके अपने गहन कमाई से मन्दिर के लिए दान भेजा है। उनका हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। अभी और दान आने की आशा है।

सूचना :

देव समाज के आगामी त्यौहार इस प्रकार हैं :
7 अप्रैल 2023 : नौकर और मालिक के संबंध में
5 मई 2023 ई. : स्ववंश के संबंध में

पाठ और विचार के विशेष दिन हैं, पाठक इन त्यौहारों को पूजनीय देव शास्त्र खण्ड चार में दिए आदेशों के अनुसार मनाएं।

श्रीमान जी 15 अप्रैल से अमरीका जा रहे हैं उनके whatsapp पर भारतीय समय सुबह 7 बजे से 8 बजे तक रात को 8 बजे से 10 बजे तक 8146553154 पर फोन कर सकते हैं।

- गौतम गोनियाना

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : - श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 4
अप्रैल 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

उद्भिद जगत के साथ हमारा सम्बन्ध

उद्भिद अर्थात पौधों, वृक्षों, तरह – 2 की फसलों, फलों की दुनिया।

परम पूजनीय भगवान क्या जीवित और क्या आजीवित अस्तित्वों की स्वयं रक्षा करते ही थे, उनको सुन्दर से सुन्दर रूप देकर ही तृप्ति पाते थे, उनको हर प्रकार की अनुचित हानि से बचाते थे, और अपने शिष्यों को भी उन्होंने विविध जगतों के सम्बन्ध में अलौकिक शिक्षा प्रदान की है।

आजकल उद्भिद अर्थात वनस्पति जगत के सम्बन्ध में दिन चल रहे हैं। यह जगत हमारे लिए जान और प्राण का भी सम्बन्धी है, इनसे निकलती आक्सीजन हमें जीवन प्रदान करती है। नेचर ने क्या अद्भुत रचना की है कि यह जगत यह स्वयं जहरीली हवा लेकर हमें जीवन – दायनी आक्सीजन प्रदान करता है।

इस जगत से ही हमें तरह 2 के अनाज, सब्जियां प्राप्त होती हैं। इनका चारा खाकर ही पशु पलते हैं और वह हमें दूध प्रदान करते हैं, बैल खेती जोतते हैं । यह जगत हमें तरह – 2 की दालें, तरह – तरह के मसाले और उपयोगी जड़ी बूटीयां प्रदान करता है, जो औषधियों में काम आती है। इस जगत से हमें बादाम, अखरोट और अन्य भांत भांत के नटस (मेवे) मिलते हैं। यह जगत हमें तरह तरह के फल प्रदान करता है, उनसे वा उन फलों से और कई प्रकार के फूलों से मुरब्बे आदि बनते हैं। यही जगत हमें लकड़ी प्रदान करता है, जो हम अनेक तरह से उपयोग में लाते हैं। पौधों से ही भिन्न भिन्न प्रकार के कपड़े बनते हैं। अचार, शक्कर, गुड़ भी इसी जगत का दान है।

परम पूजनीय भगवान ने यह शब्द रचे है:–

“उद्भिद् जगत के संग हमारा, है सम्बन्ध बहुत ही गाढ़ा
जितना उच्च बोध हो उसका, उतना बने वह हितकर प्यारा”

परम पूजनीय भगवान के भीतर इस जगत के लिए उच्च गति मूलक आद्वितीय अनुराग वर्तमान था। वह जहां भी रहे, वह स्थान फूलों से सुसज्जित हो जाता था। वह स्वयं पौधों को गोडी करते, उनकी कतर छांट करते, उनकी रक्षा का स्वयं ख़्याल रखते और दूसरों को भी ऐसे निर्देश देते।

किसी पौधें की कोई पत्ती को भी हानि

उनके कोमल हृदय पर आघात लगा देती थी। कभी किसी को फल तोड़ने के लिए वृक्षों पर प्रहार करते देखते तो ऐसा अनुभव करते कि उनके कोई बाल नोच रहा है।

परम पूजनीय भगवान इस यज्ञ की सभा में अक्सर, फल, फूल, दालें, अनाज, सूखे मेवे, लकड़ी या अन्य वस्तुएं रखकर यह समझाते कि हमें इस जगत से क्या कुछ मिलता है। ऐसे सेवाकारी जगत के उपकारों को अनुभव करके अधिक से अधिक सेवाकारी होने और उन्हें किसी भी प्रकार की हानि न पहुँचाने के लिए दिल की गहरी तड़प से उपस्थित जनों को प्रेरित करते।

श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी ने लिखा है:- भगवान कई बार फरमाया करते थे कि मनुष्य जगत की अपेक्षा उद्भिद् जगत की सेवा करने में ज़्यादा सफलता मिलती है। मनुष्य जगत के बहुत से वजूद जिस तरह कोई सेवा पाकर, उस सेवा को जान बूझकर अपने नीच अनुरागों और नीच घृणाओं के दास होने के कारण ख़ाक में मिला देते हैं, हां अपनी किसी नीच रूचि पर चोट खाकर अपने बड़े से बड़े हितकारी के सम्बन्ध में भी कृत्घन और जानी दुश्मन बन जाते हैं, इस तरह का उद्भिद जगत के अस्तित्त्वों के सम्बन्ध में कोई ख़तरा नहीं। उनके अन्दर उन नीच और औरों के लिए हानिकारक ताक़तों का प्रकाश ही नहीं हुआ जो मनुष्य जगत के लाखों और करोड़ों वजूदों में आम तौर पर पाई जाती हैं। इसीलिए पौधों की सेवा करने में भगवान देवात्मा अत्यन्त आराम अनुभव किया करते थे।

श्रीमान जी आगे लिखते हैं कि भगवान देवात्मा ने मौसमी गुलाब का एक पौधा सोलन में लगवाया। बरसात के दिन थे। उस पर काले रंग के हानि कारक कीड़े टूट पड़ते थे और उसे तबाह करते जाते थे। उन कीड़ों से पौधों की रक्षा के लिए भगवान देवात्मा ने बहुत से उपाय किए, पर कामयाबी नहीं हुई। आख़िरकार भगवान ने कपड़ा देकर हुक्म दिया कि इसके गिर्द कपड़ा लपेटा जाए ताकि पौधा पूरा ढक जाए। उसमें भगवान को सफलता मिली। 1929 में वह पौधा बड़ा होकर और सुन्दर फूल देकर हर साल ही बड़ी बहार दिखाता रहा है और ज़बाने हाल से अपने रक्षाकर्ता भगवान देवात्मा को धन्यवाद देता होगा।

भगवान देवात्मा अद्वितीय धर्म शिक्षक थे। वह रूहानी तत्वों को अक्सर उद्भिद जगत की प्रत्यक्ष और सादा मिसालों से स्पष्ट किया करते थे। पौधों के विकास और विनाश को बताते हुए मनुष्यात्माओं के विकास वा विनाश को स्पष्ट करते थे, उस समय का मण्डल कितना प्रभावदायक होता था उसका हमारे लिए अनुमान ही सम्भव नहीं।

पौधों से पाई हुई सेवाओं के सम्बन्ध में अक्सर पूजनीय भगवान वर्णन करते तो उनका दिल भर आता था, ऐसा लगता था कि पत्थर दिल भी पिघल रहे हैं। श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी आगे लिखते हैं कि भगवान के मुख़ारविंद से निकला हुआ एक 2 शब्द, उस समय कहीं से कहीं पहुंचा देता था। भगवान देवात्मा उद्भिद् जगत के सम्बन्ध में जो अद्वितीय लीला प्रगट करते थे, उनके इस रूप पर हृदय मोहित हो

जाता था।

भगवान देवात्मा पुकार उठते थे :-

क्या तुम्हें किसी पौधे को मुरझाया हुआ देखकर तकलीफ होती है और दिल में आता है कि वह मुरझाया न रहे? आज उद्‌भिद् जगत के व्रत के दिन तुम अपनी आत्मिक अवस्था पर विचार करो और देखो कि तुम उसके सम्बन्ध में क्या अवस्था रखते हो?

हम मनुष्यात्मा हैं, देवात्मा के बोधों को समझना तो बहुत कठिन है, परन्तु फिर भी उनकी शिक्षा से कुछ न कुछ बोध प्राप्त किया है। पूजनीय भगवान ने एक जगह फरमाया था कि पौधों, फूलों को बचाकर उनके पत्तों को धोना आवश्यक है क्योंकि पौधे पत्तों द्वारा सांस लेते हैं। यह पढ़कर मैंने छोटा सा फवारा मंगवाया और थोड़ा थोड़ा करके पत्तों को धोने लगी हूं। परन्तु मनुष्यात्मा उच्च भावों से शून्य और अबोधी होकर इस जगत की हानि कर देते हैं।

पिछले दिनों 4-5 पौधों को मेरी अबोधता और माली की लापरवाही से हानि पहुँची, जिसका मुझे बहुत दुख होता रहता है। कहते हैं कि हमारी शुभ कामनाओं का भी पौधों पर असर पड़ता है, यदि उनकी जीवनी शक्ति पूरी तरह नष्ट न हो गई हो। मैं कोशिश करती रही कि उनको छूकर, प्यार करके उन्हें बचाने की कोशिश करूं। इस प्रकार की कोशिश से पौधे प्रफुल्लित होने लगे एक में फूल भी लग गए। क्या इस संसार में कोई ऐसा पीर, पैगम्बर अथवा गुरू है, जिसने अद्वितीय रूहानी सत्यों और तत्त्वों के साथ 2, पौधों की भी हानि को समझा हो या ऐसी शिक्षा दी हो? क्या किसी ने इस जगत के उपकारों को स्वयं इस गहराई से अनुभव किया है और अपने शिष्यों को भी यह शिक्षा दी है? नहीं! किसी ने भी नहीं। हित अनुरागी भगवान देवात्मा ही चारों जगतों के हित के स्त्रोत थे और हैं। ऐसे अद्वितीय गुरू की शरण में आना हमारा महा सौभाग्य है। इस सौभाग्य को सफल करना तो अपनी 2 योग्यता पर निर्भर है।

जो कुछ इस जगत के सम्बन्ध में मेरे भीतर बेहतरी आई है या थोड़ा सा बोध पैदा हुआ है। उसके लिए मैं सत्गुरू की बारम्बार धन्यवादी हूं।

-सुरजीत बराड़

हमारे मोक्ष और विकास का मार्ग कैसे खुले?

नेचर में उसके करोड़ों वर्षों के विकासक्रम में सूर्य का बनना बहुत बड़ा चमत्कार है। फिर इस सूर्य से पृथ्वी का फटकर अलग होना और पृथ्वी का आग के गोले से ठंडे होते होते उस पर पानी का भरना, फिर लाखों वर्षों के बाद इस पर जानदार सैल का बनना चमत्कारों का चमत्कार है। क्या कोई अनुमान लगा सकता है कि एक आग के गोले पर भी कभी जान पैदा हो सकती थी। फिर धीरे-धीरे जीवों और पौधों के विकास का सिलसिला चल पड़ता है। नेचर ने लाखों करोड़ों साल संग्राम किया और इन्सान इस पृथ्वी पर पैदा हुए। मनुष्य की सुख अनुरागी प्रकृति जब नेचर के उद्देश्य को सिद्ध करने में सफल न हो सकी तो आख़िर पौष वदि प्रतिपदा के सूर्य

उदय के समय नेचर ने अपने भावी विकास के सारे रास्ते खोल दिए और देवात्मा को जन्म दिया। अब सवाल हो सकता है कि जिस नेचर ने लाखों करोड़ों वर्ष देवात्मा को प्रगट करने के लिए संग्राम किया, क्या उसका कार्य कभी समाप्त हो सकता है? जैसा कि वर्तमान समय में अनुभव हो रहा है। इसका उत्तर ना में मिलता है।

अब अगला सवाल यह है कि नेचर में देवात्मा को प्रगट करने का उद्देश्य क्या है?

भगवान देवात्मा फरमाते हैं :- "तुम में जहां तक संभव हो नीच गति मूलक शक्तियों का नाश हो। तुम्हें उनसे जहां तक मोक्ष प्राप्त हो सकती है, वहां तक मोक्ष प्राप्त हो। तुम्हारे अस्तित्त्व की रक्षा हो। तुम्हारे भीतर हितकर गतियां पैदा हों ताकि तुम्हारे आत्मा का जीवन बढ़े। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए विश्व ने देवात्मा को पैदा किया है। देवात्मा अपना परम लक्ष्य पूरा करने के लिए उसी तरह बेबस हैं, जिस तरह एक एक नीच गति परायण आत्मा नीच गतियां करने और उनके द्वारा नष्ट होने के लिए बेबस है।"

अब इससे आगे सवाल यह है कि क्या नेचर ने जिस लक्ष्य को पूरा करने अर्थात मनुष्यों को नीच जीवन से मोक्ष और उच्च जीवन में विकास करने के लिए देवात्मा को प्रगट किया है, वो उद्देश्य हमारे (देवात्मा के सेवकों) में पूरा हो रहा है? अफसोस इसका उत्तर भी ना में मिलता है।

देवात्मा की शरण प्राप्त करके हमारे मोटे पाप और मोटे मिथ्या विश्वास चले जाते हैं। किसी किसी संबंध में हितकर परिवर्तन भी आ जाता है। कभी संगत में बैठकर परिशोध का साधन भी करते हैं। कभी कभी कोई सेवा का काम भी करते हैं, देव समाज की सेवा भी कर सकते हैं परन्तु जो मुख्य काम मोक्ष और विकास का काम है जिससे जीवन पथ खुलता है वह काम नहीं होता।

इसका कारण क्या है? इसका मुख्य कारण यह है कि हम सधारणत: जिस वातावरण में रहते हैं वो बेहोश करने वाला वातावरण है। अगर किसी student को साल में एक दो या चार बार ही स्कूल जाने का अवसर मिले तो आप अनुमान लगा सकते हैं कि उसका मान्सिक विकास कितना हो सकता है? हमें भी देव समाज का वातावरण साल में एक दो या चार बार मिलता है अब हम इससे अपने अध्यात्मिक विकास का अनुमान लगा सकते हैं।

पूजनीय भगवान फरमाते हैं कि

"मैं चाहता हूं और बार बार चाहता हूं और व्याकुल होकर चाहता हूं कि मुझे अधिकारी आत्मा मिलें, जिनके भीतर मेरी ज्योति केवल एक वा दूसरे समय में कुछ काल के लिए ही नहीं किन्तु हर समय अथवा लगातार प्रवेश कर सके।"

फिर एक जगह भगवान ने फरमाया है :- "आत्मा के विचार से एक एक जन यह देखकर भी कि उसने नीच गति की है उसका ज़हर अंदर जमा है, परन्तु तो भी वह उसको निकालना नहीं चाहता। कहता है कि अपनी घटिया हालत बताने से हम छोटे हो जाते हैं। दूसरों की नज़रों में हम घटिया नहीं कहलाना

चाहते। अपनी कमी किसी पर ज़ाहिर न करना अच्छा है। अब हम चोरी तो करते नहीं। जो पहले की हैं उसको क्यों वापिस करें? आगे को नहीं करेंगे। यह भी मनुष्य का झूठा वायदा है कि वह आगे को ऐसा नहीं करेगा। उसके अंदर जो शक्ति मौजूद है, वह उससे अपना अमल कराएगी। यही कारण है कि मनुष्यों के जीवन में नाना प्रकार की नीच गतियां जारी रहती हैं। वह विनाश के मार्ग पर पड़े हुए हैं। वह खुद विनष्ट होना चाहते हैं, वह बचना नहीं चाहते। मनुष्य की यह अवस्था बहुत भयानक है। ऐसे मनुष्यों को जो खुद मरना चाहते हैं कोई नहीं बचा सकता।

ऐसे आत्माओं की आवश्यकता है कि जो मोक्ष और विकास के सच्चे अर्थों में आकांक्षी हों, मोक्ष और विकास के साधनों में प्रवृत्त हो सकें। ऐसे आत्माओं को लेकर ही आगे सिलसिला चल सकता है। तभी हम कोई सच्चे अर्थों में स्थाई काम कर सकते हैं। काश! कि हमें ऐसे आत्मा प्राप्त हों।"

अब अगला प्रश्न यह है कि हमें लगातार भगवान की रोशनी कैसे मिले? इन्सान के पास सीखने की दो विधियां हैं। पहली विधि यह है कि वो खुद अपने Experience (अनुभव) से सीखे। दूसरी विधि यह है कि अगर उससे पहले वो काम किसी ने किया हो तो उसकी नकल करके सीख सकता है। देव समाज के इतिहास में श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी का जीवन हमारे लिए दृष्टांत है कि कैसे वो प्रतिदिन पूजनीय भगवान की ज्योति शक्ति प्राप्त करते थे। वो प्रतिदिन अपने नीच जीवन को भगवान की रोशनी में देखकर लिखने के साधन करते थे, जिससे उनकी रोशनी मिलने का मार्ग उनके लिए साफ हो गया। हम उनकी नकल करके लाभ उठा सकते हैं।

अगली मुसीबत यह है कि हम साधन नहीं करते, अगर करते हैं तो वो लगातार नहीं चलते। हमारे हितकारी सारी आयु ऐसे लोगों को तरसते रहे, कि जो लिखने के (मोक्ष और विकास के) साधन कर सकें।

इसका solution (हल) जो मुझे दिखाई देता है, वह यह है कि कुछ ऐसे लोगों का समाज से Selection (चुनाव) हो जो साधन कर सकते हैं। फिर उनको साधन करने, (लिखने के साधन करने) के लिए Motivate (उत्साहित) किया जाए। उन पर लगातार नज़र रखी जावे। जैसे Teacher अपने students पर नज़र रखते हैं कि उन्होंने homework किया या नहीं। उसी प्रकार बड़े धर्म संबंधी हम पर नज़र रखें।

मुक्ति फौज के मेजर टक्कर यह नारा लगाते थे कि "ईसा मेरे बचावनहार गुरू हैं, मैं उनके लिए क्या नहीं कर सकता।" (Christ is my saviour what can I not do for my lord)

काश! यही भावना हमारे भीतर अपने गुरू के लिए पैदा हो सके। और हमारे अन्दर से भी यह निकले कि

"देवात्मा मेरे बचावनहार गुरू हैं, मैं उनकी इच्छा को पूरी करने और अपने और ओरों को बचाने के लिए क्या नहीं कर सकता"?

-गौतम गोनियाना

नोट : विकासार्थी होने पर हमें हररोज साधन करने वा साधन कापी लिखनी होती थी, उच्च धर्म सम्बन्धी उसे चैक करते थे।

-सुरजीत बराड़

सबसे उत्तम काम

विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान पी.वी. कनल जी "माई स्टोरी" में लिखते हैं :-

"हमारी शक्तियां बहुत सीमित हैं। उनकी सर्वोत्तम सफलता देव समाज की सेवा में है। उनको किसी और काम में लाना महा मूर्खता है, चाहे वह पब्लिक सेवा का ही काम हो। मनुष्य मात्र की सबसे महान सेवा यह है कि उनको देवात्मा के देवरूप और देवसमाज के साथ जोड़ दिया जाए। भगवान देवात्मा की ज्योति और शक्ति की प्राप्ति के बिना कोई भी जन मानवता की सर्वोत्तम सेवा नहीं कर सकता। मनुष्य की सर्वोच्च सेवा इसमें है कि वह अपने आत्मा का ज्ञान और बोध प्राप्त करे, और नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से मोक्ष प्राप्त करने और उच्च और सात्विक भावों को विकसित करने के योग्य बने। हरबर्ट स्पेन्सर के लिए, जो संसार को एक नई फिलासफी दे सकते थे, यह कितना व्यर्थ काम होता यदि वह एक किसान की खेती में यह समझकर सहायता करते रहते कि यह भी मानवता के लिए एक हितकर काम है।

देव समाज का एक कर्मचारी अपनी अत्यन्त मूल्यवान शक्तियों को नष्ट करेगा, यदि वह आत्माओं को ज्योर्तिमान करने और उभारने में सहायक होने की बजाए किसी हस्पताल में नर्स का काम करे, यह समझ कर कि नर्स का काम भी तो अच्छा काम है। उसका काम संसार में सबसे ऊँचा काम है, जिसने भगवान के मिशन को ही अपना लक्ष्य बना लिया, और संसार के अन्य सब कामों से उसे उत्तम समझा।

किसी विचारशील ने कितनी सुन्दर बात कही है कि "अच्छी पुस्तकें मत पढ़ो, सबसे अच्छी या सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें पढ़ो।" आह! जिन्दगी कितनी छोटी है, समय कितना थोड़ा है। अच्छी पुस्तकें बहुत सी हो सकती हैं। उनके पढ़ने का समय भी हमारे पास नहीं है, इसलिये केवल वही पुस्तकें पढ़ने का यत्न करें, जो सबसे सर्वोत्तम हैं। इसी प्रकार हम अपना कीमती समय, अपनी शक्तियां और अपना कर्म केवल उसी मिशन और उसी लक्ष्य में लगाएं जो संसार में सबसे श्रेष्ठ है और वह मिशन भगवान देवात्मा का मिशन है। उन जनों के सौभाग्य की सीमा नहीं, जिन्हें भगवान देवात्मा और उन के मिशन का पता लग गया है। संसार में अनेक ऐसे जन भटक भटक कर अपना जीवन व्यर्थ खो गए और अब भी खो रहे हैं, जो शक्तियां, सामर्थ्य और योग्यताएं तो कमाल की रखते थे, परन्तु जिन्हें यह पता न लगा कि किस काम में लगकर उन का जीवन सफल हो सकता है। हम जो भगवान देवात्मा के सेवक सेविका हैं उन के लिए समय है कि किसी दुविधा में न पड़ कर और किसी असमंजस्य में न पड़ कर हम भगवान देवात्मा के सर्वश्रेष्ठ मिशन को अपनाएं और यह प्रण करें कि केवल यही और यही काम जीवन में करना है। हमारे जीवन की किश्ती के लिए कोई और किनारा नहीं हो सकता और कोई सहारा नहीं हो सकता। भगवान देवात्मा देव शास्त्र के तीसरे खण्ड के 19वें अध्याय

में फ़रमाते हैं : -

"मनुष्य जगत में एक ओर आत्मा के अस्तित्त्व और उसके जीवन के सम्बन्ध में जो महा घोर अन्धकार छाया हुआ है, और दूसरी ओर उसमें उसके घटिया सुख अनुरागों और उनसे उत्पन्न नाना प्रकार की घृणाओं के कारण जो विविध प्रकार के मिथ्या धर्म मतों और अन्य विविध मिथ्याओं और विविध प्रकार के अशुभ कर्मों और विविध प्रकार की अशुभ चिंताओं की आत्मिक पतन और विनाशकारी गतियां जारी हैं, उन नाना प्रकार के मिथ्या धर्म मतों और अशुभ कर्मों से उद्धार, और जिस देवात्मा की देव शक्तियों के देव प्रभावों को पाकर कोई मनुष्य इस प्रकार के उद्धार और सत्य मोक्ष देने का काम कर सकता है, उस देवात्मा की शरण में इस प्रकार से कुछ भी उद्धार प्राप्त लोगों को लाने, और उनके आत्मिक कल्याण के पथ को उनकी योग्यता के अनुसार खोलने का जो काम हैं, उससे बढ़कर मनुष्य के लिए और कोई भी हितकर काम नहीं। यही और केवल यही काम सब प्रकार के अन्य परोपकार विषयक कामों से बढ़कर - हाँ, सैकड़ों गुणा बढ़कर - श्रेष्ठ है, और किसी ऐसे कार्य से किसी भी विशुद्ध सात्विक सुख अनुरागी जन के आत्मा का जितना हित होता है, उतना और उस प्रकार का हित और किसी परोपकार विषयक कार्य के द्वारा नहीं होता, और नहीं हो सकता। इसलिये नेचर के इस सर्वश्रेष्ठ कार्य के निमित्त जहां तक कोई जन अपने धन वा अपनी सम्पत्ति को समर्पण करे, जहां तक अपने शरीर के हाथ, पांव आदि अंगों की शक्तियों को अर्पण करे, जहां तक अपनी सोच विचार अथवा किसी विद्या विषयक मान्सिक शक्तियों को अर्पण करे, और जहां तक सच्ची आवश्यकता के अनुसार उसके निमित अपने मान, अपनी प्रशंसा, अपनी बड़ाई, अपने पद, अपने शारीरिक स्वास्थ्य और अपने अन्य शारीरिक सुखों आदि का त्याग करे, वहां तक अपने आत्मा का जितना सच्चा हित कर सकता है, उतना और किसी परोपकार विषयक कार्य के द्वारा नहीं कर सकता।"

मनुष्य को निरोग करना, किसी के शरीर को बलवान बनाना, किसी की गरीबी हटाना और किसी को मान्सिक शिक्षा देना भी अच्छे काम हैं, परन्तु यह ज़रूरी नहीं कि इन सब बातों से उनके आत्मा का हित हो या उनका चरित्र उच्च बने और वह दूसरों के लिए हानिकारक जीव न रहकर हितकर जीव बने। बल्कि अनेक सूरतों में मनुष्य बलवान, धनवान और विद्वान बनकर, किन्तु नीच भाव रखकर वह इन सब बातों का दुरुपयोग करता है और अपने और दूसरों के लिए अधिक हानिकारक बन जाता है। इतना ही नहीं वह अपने धन और बल को फिर भी बार बार नष्ट करता रहता है। यही कारण है कि संसार में उपरोक्त बातों पर बहुत सा धन और शक्तियां लगाए जाने पर भी मानवता हितकर रूप धारण नहीं करती और नेक और सेवाकारी नहीं बनती, क्योंकि नेक और सेवाकारी बनना तो आत्मा में उच्च परिवर्तन से ही हो सकता है। इसके विपरीत यदि चरित्र उच्च हो, आत्मा उच्च हो तो आत्मा का भला करने के भिन्न मनुष्य अनेक दशाओं में अपने बाहर की परिस्थितियां

भी बेहतर करने के योग्य बन जाता है। देव समाज का इतिहास इसका साक्षात प्रमाण है। देव समाज का इतिहास इस बात की भी बड़े जोर से साक्षी देता है कि एक एक जन और एक एक परिवार को भगवान देवात्मा से जोड़ कर हम किस प्रकार उनकी नाना भलाईयों का द्वार खोल सकते हैं और उन्हें दुखों, अनमेल और तबाही से बचा सकते हैं और अपने पीछे एक ठोस भलाई का काम छोड़कर जा सकते हैं।"

भगवान देवात्मा का कल्याणकारी उपदेश

पूजनीय भगवान ने अपना उपदेश इस प्रकार आरम्भ किया : -

जीवन तत्त्व की ज्योति फैले, जीवन बल चहुं दिग वितरण हो;
अधिकारी जन उच्च बनें सब, सत्य धर्म का बोध उत्पन्न हो।

सत्य धर्म के बोध के बिना मनुष्य जीवन निष्फल! सत्य धर्म के बोध के बिना मनुष्य को अपने मुख्य लक्ष्य का कोई बोध नहीं होता। और इसलिए वह मिथ्या लक्ष्य की ओर जाता है। सत्य धर्म के बोध के बिना मनुष्य को अपने आत्मा के रूप और उसके जीवन के विषय में कोई बोध नहीं होता। वह अंधकारग्रस्त और अज्ञानी रहता है और नीच लक्ष्य परायण रहकर नीच गतियां ग्रहण करता है। सत्य धर्म के बोध के बिना मनुष्य को अपने आत्मा की मृत्यु अथवा विनाश और विकास, आत्मा के जीवन अथवा उसके कल्याण के संबंध में कोई बोध नहीं होता। और इसीलिए वह नाना नीच सुखों का दास बनकर अपने आत्मा को मृत्यु की ओर ले जाता है, और जान बूझ कर अथवा अनजाने में ऐसा करता है, और अपने कल्याण साधन से बेमुख रहता है। तब ऐसा हो कि देवात्मा का अद्वितीय आविर्भाव जो अधिकारी मनुष्यों में सत्य धर्म विषयक बोध पैदा करने के लिए हुआ है और जिसकी देव ज्योति और देव तेज को ग्रहण करने के योग्य होकर मनुष्यात्मा अपनी अपनी योग्यता के अनुसार अपने आत्मिक जीवन के संबंध में सत्य बोध लाभ कर सकते हैं और कितनों को ऐसा अल्पाधिक बोध प्राप्त हुआ है, उनकी वह अद्वितीय ज्योति और शक्ति तुम में से जिस हृदय में जहां तक प्रवेश कर सकती हो, वहां तक प्रवेश करे और उसके देव प्रभावों से तुम में से जिस जिस के आत्मा में जहाँ तक उच्च परिवर्तन आ सकता हो, वह आवे। और मेरे द्वारा जहां तक तुम्हारा हित हो सकता हो, वहां तक हित हो और तुम में से जिन जिन के हृदयों में सत्य धर्म का जितना कुछ बोध जाग्रत और उन्नत हो सकता हो वह जाग्रत और उन्नत हो। बोध क्या? अनुभव करने की शक्ति का होना। कुछ महसूस करना। अपने ऊपर असर होना। एक छोटे बच्चे को कहें कि तू खराब है, तो उस पर असर नहीं होता। परन्तु किसी बड़े को कहें, तो उसका चेहरा बदल जाता है। छोटे बच्चे में अहं का बोध नहीं है, बड़े में बोध है। हम जो कुछ कहते हैं, उसका हर एक की अपनी अवस्था के अनुसार उस पर असर होता है।

तुम में से कितनों ने अब तक कुछ पता नहीं दिया कि उपदेश या साधन से क्या लाभ हुआ है? किस बात के लिए आकर्षण पैदा हुआ है और किसके लिए विकर्षण?

पूजनीय भगवान ने नाना दृष्टान्त देकर बताया कि बोध क्या होता है? किसी भाव के विषय में तुम तब कुछ समझोगे, जब तुम्हारे भीतर वह भाव मौजूद होगा। कुछ शक्तियां तो ऐसी हैं कि जिनके विषय में ज्ञान प्राप्त करना वा जानना बहुत ही आवश्यक है। यथा (1) कष्ट बोध, (2) हानि बोध इत्यादि। पशु जगत के विकास में पहला बोध कष्ट बोध है। एक एक मनुष्य का बच्चा इस बोध को मां के पेट से ही अपने साथ लाता है। ऐसी स्नायु प्रणाली मां के पेट से ही उसमें पैदा हो जाती है। फिर यह कष्ट बोध आगे चलता है। एक अवस्था यह होती है कि शरीर के संबंध में तो कष्ट बोध होता है, परन्तु आत्मा के संबंध में किसी नीच गति के होने पर कोई कष्ट नहीं होता।

शरीर के अंगों के द्वारा असर दिल तक पहुंचता है परन्तु वास्तव में दुख दिल (आत्मा) में ही होता है। दिल पर आघात से शरीर को भी हानि पहुंचती है। सबसे जल्दी असर पेट पर होता है। इसलिए कितने ही जनों को दस्त आदि लग जाते हैं। पेट काम करना छोड़ देता है।

दूसरी बात हानि की है। कुछ बातों के विषय में हम ज्ञान से जानते हैं कि इसमें हानि है। कोई आदमी लाल मिर्च खाता है। इसके बिना उसे स्वाद नहीं आता। उसको बताओ कि लाल मिर्च खाने से आँखों पर खराब असर पड़ता है, तो भी उसको कोई दुःख नहीं होता। शरीर की कई बीमारियां ऐसी होती हैं जिनमें कष्ट कोई नहीं होता है जैसे बेहोशी की बीमारी, लकवा या फालिज, दुर्बलता या अनीमिया इत्यादि। एक आदमी अंधा हो गया है, या बहरा है, इनमें कष्ट कोई नहीं है परन्तु हानि ज़रूर है।

आत्मा के संबंध में भी यही बात है। कष्ट बोध और हानि बोध में फर्क है। किसी की किसी वासना पर चोट लगाओ तो उसे कष्ट पहुंचता है, परन्तु जब वह किसी की हानि करता है तो उसको कष्ट नहीं होता। एक एक पापी को पाप करने में रस मिलता है। एक ही बात से एक को कष्ट और दूसरे को खुशी होती है। जब तक कष्ट बोध और हानि बोध न पैदा हों तब तक एक एक मनुष्य की यह अवस्था रहेगी कि वह किसी को हानि पहुंचा कर कोई कष्ट बोध नहीं करेगा। दुनिया में मत मतान्तर चाहे कितने ही फैले रहें। शक्तियों का खेल है। मनुष्य की शक्तियों में जब तक उच्च परिवर्तन न आवे, तब तक उसका कुछ नहीं बन सकता। आवश्यकता है कि तुम्हें कोई ऐसी शक्ति मिले जो तुम्हारी नीच गति को बदल दे। यह हो सकता है कि एक एक नीच गति को करते हुए तुम्हें कोई कष्ट बोध न हो, परन्तु नीच गति का फल अर्थात् हानि आवश्यक है। एक एक जन कह सकता है कि जिसकी चोरी की, उसकी हानि हुई, मेरा क्या बिगड़ा? मनुष्य को हम यह रोशनी देने की कोशिश करते हैं कि नेचर में नीच और उच्च परिवर्तन का क्रम जारी है। तुम उसके नतीजे से बच नहीं सकते। नीच परिवर्तन का नतीजा क्या

है, विनाश। यह बात किसी को समझ में आवे चाहे न आवे, परन्तु नीच परिवर्तन का नतीजा विनाश है। नेचर का यह नियम अटल है। कितने ही मनुष्यों को शरीर का बोध नहीं है। व्यायाम, खुली हवा आदि शरीर के लिए हितकर है। जिसमें बोध है, वह कहता भी है कि व्यायाम न करने से हानि हो रही है और उसका नतीजा प्रकट होकर रहेगा। एक एक जन जीता है परन्तु यदि वह स्वास्थ्य के नियमों को पूरा करता तो और भी अधिक देर तक जीता और देर तक मजबूत रह सकता था। कष्ट न भी हो, तो भी हानि जरूर होती है। तब ऐसा हो कि हानि के रूप का बोध हो और मनुष्य उससे बच सकें। बेहोशी की हालत में कष्ट चाहे न हो, परन्तु उससे एक एक जन का नुकसान होता है। अबोधियों को बोधी बचा सकता है। यह तत्व भली भांति समझना चाहिए कि एक एक गति में कष्ट नहीं होता परन्तु हानि अवश्य होती है।

पूजनीय भगवान की कलम से एक कहानी
पाठ बोध दूसरा भाग

धनी राम और स्वर्णलता की कहानी

रत्ना नदी के तट पर ग्राम बसता था। इस ग्राम में धनीराम नामी एक वृद्ध वणिक् वास करता था। धनीराम के एक कन्या के भिन्न और कोई संतान न थी इस कन्या का नाम स्वर्णलता था। धनीराम कितने ही धनी लोगों की न्याईं बहुत कृपण मनुष्य था "स्वर्ण स्वर्ण" यही एक मात्र उसका जप और तप था। उस की दिन रात यही एक चिंता थी, कि किसी प्रकार मुझे सोना प्राप्त हो, और अधिक से अधिक प्राप्त हो। सोने के लिए सोच विचार करना, सोने के लिए परिश्रम और यत्न करना, यही उसका काम था। सोने को पाकर ही उसका सुख और आराम था। धनीराम ने बुढ़ापे तक बहुत सोना इक्ट्ठा किया था। उसकी एक बड़ी कोठड़ी कि जिसमें वह अपनी सारी सम्पत्ति रखता था, सोने के मुद्राओं, अलंकारों, सोने की ईंटों और विविध प्रकार के मूल्यवान रत्नों से भरी हुई थी। धनीराम उसके भीतर हर एक दिन प्रवेश करके और द्वार बंद करके जब अपनी अशरफियों को गिनता, और उनकी खनखनाहट का शब्द सुनता, तब बहुत प्रसन्न होता। गहनों को हाथ में लेकर बहुत सुखी होता। अशरफियों की थैलियों को पेट और छाती पर रखकर बहुत हर्षित होता। परन्तु एक एक बार इस हर्ष के साथ उस के हृदय में यह विषाद भी उत्पन्न होता, कि इतनी बड़ी आयु में लगातार परिश्रम से उस ने अब तक जितना स्वर्ण एकत्र किया है, वह बहुत थोड़ा है इधर वह अब वृद्ध हो चुका है, परिश्रम के दिन समाप्त होने वाले हैं, फिर किस प्रकार यह धन और बढ़ेगा? हाय! क्या ऐसा कोई उपाय नहीं, कि वह बिना बहुत परिश्रम के प्रति दिन सेरों और पन्सेरियों और हो सके तो मनों सोना इकट्ठा कर सके? क्या अच्छा हो कि कभी कुबेर देवता उस की इस आकांक्षा को जानकर उसे कोई ऐसा वर प्रदान कर दें कि जिस से उस की मनोकामना पूरी हो सके। धनी राम

इस प्रकार के भावों के उठने पर एक एक बार बहुत व्याकुल हो जाता और इस व्याकुलता के बढ़ जाने पर चुपचाप न रह सकता और फूट पड़ता और ऊंचे ऊंचे शब्दों में कुबेर देवता से प्रार्थना करता कि "हे स्वर्णपति! मेरी कामना पूर्ण करके मेरे इस दुख को दूर करो।"

धनीराम निस्संदेह स्वर्ण - भक्त था। परन्तु वह अपनी कन्या को भी बहुत प्यार करता था। स्वर्ण भक्त होने के कारण उस ने अपनी अति प्यारी कन्या का नाम भी स्वर्णलता रखा था, और उसके नाम में जो स्वर्ण शब्द आता था। उसका उच्चारण करके वह बहुत हर्षित होता था, परन्तु स्वर्णलता यूं भी उसे बहुत प्यारी थी।

एक दिन ऐसी घटना हुई, कि धनीराम जब अपनी अन्धेरी कोठड़ी में बैठा हुआ स्वर्ण को देख देख कर हर्षित होने के अनन्तर पूर्वोक्त प्रकार के विषाद में मग्न हो रहा था, और कुबेर देवता को स्मरण करके अपनी यह कामना प्रकाश कर रहा था, कि "हे भगवन!तुम मुझ को ऐसा वर दो, कि मैं जिस वस्तु को स्पर्श करूं, वही वस्तु सोना हो जावे" तब एक दिव्य पुरुष (काल्प) उसके सन्मुख प्रकाशित हुआ। धनीराम उसे देख कर पहले तो डर गया, फिर उसने साहस करके पूछा, कि आप कौन हैं? उस पुरुष ने कहा, कि "मैं कुबेर हूं, और तुझ पर प्रसन्न होकर वर देने को आया हूं। परन्तु धनीराम! तू इस वर को लेकर क्या करेगा? तेरे पास तो पहले ही मनों सोना है, और तू अब बूढ़ा हो रहा है, कुछ दिनों में मर जायेगा, फिर तेरे साथ तो यह सोना नहीं जाएगा, किंतु तू इस के महा मोह के कारण मरने के अनन्तर घोर दुख और क्लेश पाकर रात दिन जलता रहेगा। फिर इस की रक्षा की चिन्ता से तू पहले से ही दुखी रहता है, आगे यह चिन्ता तेरी और बढ़ जाएगी और इस धन को तेरे जीते जी चुराकर अथवा तेरे मरने पर किसी और प्रकार से पाकर जो लोग उसे बुरे कामों में व्यय करेंगे, उनका पाप भी तुझ पर चढ़ेगा। फिर बता, इसके और बढ़ाते जाने में हानि के भिन्न और लाभ क्या है? हां, यदि तू इस धन का पुण्यार्थ व्यय करना चाहे कि जिससे जहां औरों का कल्याण हो, वहां तेरा अपना भी भला हो, तो मैं तुझे तेरा अभिलाषित वर भी दे सकता हूं।" धनीराम कुबेर जी के दर्शन और अपनी आशा के पूर्ण होने का अवसर देखकर, पहले जितना उत्फुल्ल हुआ था, उतना ही उनके उपदेश को सुनकर दुखी हो गया और मलानमुख होकर बोला "महाराज! यदि औरों के निमित्त दान करने के लिये मेरा धन होता, तो आज मैं धनीराम न होता औरों के लिये ही यदि धन उपार्जन करना हो, तो फिर उसके उपार्जन करने की ही क्या अवश्यकता है? महाराज! मैं नरक का दुख सहने को प्रस्तुत हूं, परन्तु अपने इस प्रिय धन को अपने जीते जी अपने पास से दूर नहीं कर सकता। भगवन्! मुझ बूढ़े को निराश न करो, मैं बूढ़ा होकर अधिक परिश्रम करने के योग्य नहीं रहा, ऐसे समय में यदि मुझे यह वर देदें, कि मैं जिस वस्तु को भी छू दूँ (हाथ लगाऊँ), वही सोना हो जाय, तो मैं सदा आप के गुण गाता रहूंगा।" कुबेर ने कहा, "तू बाल्यकाल से मोह का अभ्यास करते करते बहुत भयानक अवस्था में पहुंच चुका है। तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और तेरे भीतर घोर अन्धकार छाया हुआ है, तू शुभ और अशुभ में कोई अन्तर

नहीं देख सकता। आज जिस धन को अपने हाथों से किसी और को दान नही कर सकता और उसके दूर होने के चिन्तन से ही अपने हृदय में इतना आघात् अनुभव करता है, उस धन के साथ जब कुछ काल में तेरा मोह और बढ़ जायेगा, और तुझे मरकर सर्वदा के लिए उससे अपना सम्बन्ध काटना पड़ेगा, तब तेरी क्या अवस्था होगी? उस समय तुझे जो कुछ असह्य क्लेश मिलेगा, उसका तूँ कुछ अनुमान कर सकता है? फिर जिस धन तृष्णा से विवश होकर तूँ मुझ से ऐसा वर चाहता है, उस वर को पाकर भी क्या तूँ सुखी हो सकता है? कदापि नहीं इसलिए धनीराम! तूँ यह वर न मांग।"

धनीराम - महाराज! मैं तुम्हारा वर पाकर दुखी नहीं होऊँगा, तुम मुझ पर कृपा करो मुझे यह वर अवश्य प्रदान करो।

कुबेर - "तथास्तु"- कल सूर्योदय से ऐसा ही हो। यह शब्द सुनते ही धनीराम ने उनके पैरों पर गिरकर प्रणाम किया, और कुबेर महाराज वहां से उसी समय अंर्तध्यान हो गए।

धनीराम सोच रहा था कि कब आज की रात कटे, और कल सूर्योदय होने पर मेरा वर सफल हो। बहुत प्रतीक्षा और उद्वेग के अनन्तर धीरे धीरे यह समय कटा। उधर सूर्य निकला; इधर धनीराम ने घर की कितनी ही वस्तुओं को थोड़ी देर में ही छू डाला और वह सब सोना बन गई। धनीराम के हर्ष की कोई सीमा न रही। जिस वस्तु को उसका शरीर स्पर्श कर देता है, वही सोना बन जाती है और तो और, उसके गले के सब वस्त्र भी सोना बन गए हैं। घर का कितना ही लकड़ी काठ सोना बन गया है। थोड़ी देर में ही चारों और मानो सोने के ढेर लग गया है। धनीराम के लिए इतने सोने का सम्भालना तक कठिन हो रहा है। देखते देखते आहार का समय आ पहुंचा। धनीराम ने अपनी कन्या को बुलाया और वह गरम गरम भोजन लेकर आ गई। धनी ने ज्यों ही थाली को हाथ लगाया, त्यों ही वह सोने की बन गई। फिर उस ने रोटी तोड़ कर ज्यों ही खाने के लिए मुंह खोला, त्यों ही वह ग्रास भी सोना बन गया रोटी, दाल, भाजी प्रत्येक वस्तु सोना बन गई। अब धनीराम खाए ता क्या खाए! थोड़ा सा मोहन भोग (हलवा) रखा हुआ था, वह भी ऐसा न रहा कि जिस को धनीराम मुंह में डाले जिस गिलास में पानी था, उसे उठाकर जब मुंह से लगाना चाहा, तब वह गिलास और उसका पानी भी सोना बन गया। देखते देखते जब सब अन्न, व्यंजन और जल सोना बन गया, तब धनीराम भूख और प्यास से व्याकुल होकर तड़पने लगा-हाय! यह क्या हो गया! मैं अब क्या खाऊं और क्या पीऊ? हाय! मैं भूखों मर जाऊंगा। हाय! मैं प्यासा मर जाऊंगा। हाय मैं इतना धनी होकर इतना सोना रखकर फिर भी कंगाल से बुरा हूं। उस को तो एक समय रोटी भी मिल जाती है। परन्तु हाय! मुझे अन्न-जल कुछ नहीं मिलता! हाय! मैं क्या करूं! हाय मैं क्या करूं! यह कह कह कर चिल्लाता है और रोता है और कभी अपनी छाती को और कभी अपने सिर को पीटता है। स्वर्णलता अपने पिता के इस आर्त्तनाद को सुनकर दौड़ी आती है, और उसे पकड़कर रोना चाहती है परन्तु रोएगी क्योंकर? अभी उसने पिता के शरीर को ही स्पर्श किया था, कि वह भी सोना बनकर मर गई। धनी की स्त्री जो

कहीं पड़ोस में गई थी, वह भयानक संवाद पाकर दौड़ी और अपने पति के सिर पर हाथ रखकर चिल्लाना चाहती थी, कि वह भी सोना बन कर भूमि पर गिरी, और मर गई। अब धनीराम के दुख और विलाप की कोई सीमा न रही। सोने की भक्ति से वर मिला पर सारा परिवार नष्ट हो गया धनीराम फिर कुबेर देवते को स्मरण करके और रो रो कर प्रार्थना करने लगा, "महाराज! इस से मेरी रक्षा करो। "कुबेर जी ने फिर आकर दर्शन दिए और कहा कि "धनीराम तू ने यह कभी दोहा नहीं सुना :-

दोहा "अति का भला न बोलना,
अति की भली न चुप्प
अति का भला न बरसना,
अति भली न धुप्प।"

धनीराम ने कहा-कृपानाथ! मुझ पर फिर कृपा करो, यह वर फेर लो, और मेरी स्त्री और कन्या को जीवित करो, और मेरे बचने का भी कुछ उपाय करो। सचमुच अति लालच से मेरा सब कुछ चला गया। इस महा विपद में पड़कर अब मुझे आप की कृपा से बोध हो गया है। मैं अब अपने निर्वाह के लिए आवश्यक धन रखकर और सब धन सत्कार्यो में दान करूंगा! आप मेरे इस अंगीकार पर विश्वास करें, और इस महा विपदा से मेरी रक्षा करें।

कुबेर जी ने एक कमण्डलु में से कुछ जल निकाल कर पहले धनीराम पर छिड़का, फिर उसकी स्त्री और कन्या पर छिड़का, और वह सब उठ खड़े हुए, सब ने कुबेर जी को साक्षात प्रणाम करके धन्यवाद दिया और वह पहले की न्याई फिर अर्न्तध्यान हो गए। धनीराम भी अपने अंगीकार के लिए सच्चा रहा। उसने अपना अधिकांश धन नाना प्रकार के सत्कार्यों में व्यय किया कि जिस से उसका, उसके परिवार का, और शत: शत: और लोगों का बहुत भला हुआ। रत्ना नदी पर पत्थर का जो बहुत सुन्दर घाट बना हुआ है, वह इसी धनी राम का बनाया हुआ है।" यह काल्पनिक कहानी हम मनुष्यात्माओं के लिए बहुत बड़ा सबक है कि हम जीते जी जो कुछ अपनी हैसीयत के अनुसार हो सकता है, अपना धन दूसरों के भले में लगाएं।

आपका साहित्य मनुष्य के लिए अनुपम वरदान है।

आपका साहित्य मानवता के लिए उच्चतम आशाओं और वरदानों का संसार खोल देता है। ज्ञान-प्रेमियों के लिए यह उस श्रेष्ठतम तथा परम ज्ञान के द्वार खोल देता है, जो उसके अपने विषय में है। यह ज्ञान न केवल अत्यंत दिलचस्प है, क्योंकि यह सारे जीवधारियों में श्रेष्ठ अस्तित्त्व के विषय में है, किन्तु यह अपने फलों में भी परम लाभकारी तथा असीम हितों की ओर ले जाने वाला है। भौतिक-शक्तियों के ज्ञान ने मनुष्य को सब पिछली नस्लों से बहुत अधिक आगे बढ़ा दिया है। उसने असंख्य सुविधाएं और सुख मनुष्य को प्रदान कर दिए हैं। बहुत बड़ी शक्ति का रसास्वादन आज के मानव को प्राप्त है। जिन जातियों या देशों ने सर्व-प्रथम यह ज्ञान प्राप्त किया, वह न केवल विशाल निधियों की स्वामी बन गईं, किन्तु उन देशों या जातियों की भी

मालिक बन गईं, जो उस ज्ञान से शून्य थे। इस ज्ञान से मनुष्य ने धरती, समुद्र तथा वायु को जीत लिया और सारे संसार को एक लड़ी में पिरो दिया।

परन्तु आपने जिस अनुपम ज्ञान की दुनिया खोल दी है, उसमें मानवता की सच्ची और सर्वोच्च उन्नति का सामान है। इस ज्ञान को पाकर मनुष्य एक नई शक्ति प्राप्त करेगा और जो शक्तियां उसके लिए विनाशकारी बनी हुई हैं, उन्हीं को अपनी तथा दूसरों की भलाई में लगा सकेगा। मनुष्य के हाथ में ज्योंही यह ज्ञान आ जाएगा तथा ज्योंही इसकी महिमा मनुष्य पर प्रकट होगी, त्योंही नई रोमांचकारी कविता, अत्यंत ज्योतिर्मान दर्शन (Philosophy), जीवनदायक साहित्य, उच्चतम प्रेरणाओं से भरपूर नाटक, हां, ज्ञान के सारे हितकर क्षेत्र मनुष्य के लिए खुल जायेंगे, जो दिमागी और उच्च - जीवन के लिए सच्ची खुराक प्रदान करेंगे। इस ज्ञान के न होने के कारण मनुष्य कल्पनाओं पर जीता है, तथा उसका हृदय कूड़े - करकट पर पलता हैं। आपने जो महानज्ञान की दुनियाखोल दी है, वह जब तक मानवता की आँखों से छुपी रहेगी, तब तक मनुष्य उन सब बरकतों से वंचित रहेगा जो उसके आत्मा को ज्योतिर्मान कर सकती हैं और सत्य और शुभ की ओर जाने का बल प्रदान कर सकती हैं। आत्मा का सत्य ज्ञान एक ऐसा लाभ है कि जिसका कोई भी मूल्य नहीं। आपका देव - तेज जो मनुष्य को झूठ और बुराई की ओर बहा ले जाने वाले नीच - प्रलोभनों के तूफानों का मुकाबला करने का बल प्रदान करता है, 'आत्मा' का सच्चा प्राण है। उपरोक्त ज्योति एवं तेज का प्राप्त न होना मानवता का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है। मानवता मिथ्याओं, बुराईयों तथा पापों पर पल रही है, तथा उस पर नीच - रागों और नीच - घृणाओं का राज्य है। इन्होंने मानव को परस्पर सम्बन्धों तथा व्यवहारों में पागलपन तक पहुंचा दिया है। अन्धी - शक्तियां जिधर चाहें मनुष्य को ले जाती हैं तथा घरों में, सोसाइटियों, में तथा देशों और जातियों में नारकीय लीला पैदा करती हैं।

आपके साहित्य का अध्ययन और मनन एक अत्यंत साधारण मनुष्य को भी अपने जीवन और आत्मा के बारे में वह ज्ञान प्रदान करता है कि जिससे न केवल उसके जीवन में उच्च परिवर्तन आता है, किन्तु उसके शब्दों में एक नई गूँज भी उत्पन्न हो जाती है। मैं कई बार यह देख कर हैरानी से भर गया हूँ कि किस प्रकार ग्रेजुएट तथा एम. ए. आपके ऐसे तुच्छ सेवकों की भी प्रशंसा करते नहीं थकते कि जो सेवक अपने बड़ों के सन्मुख मुश्किल से मुंह खोलते हैं। "आपको यह अनोख ज्ञान कहाँ से मिला है?" वह उस सेवक से पूछते हैं। मैं एक युवक को जानता हूँ जो कुछ समय के लिए आपके प्रभाव पाने का अधिकारी बना। वह बताता था कि उसके कालिज के साथी उसे कहते हैं कि "तुम्हारे विचार तो सर्वथा नए और बहुत ही ऊंचे हैं, तुम्हें यह कहाँ से मिले हैं?" मैं एक किसान को जानता हूँ जो आपके चरणों में आए और जिन्होंने आपकी ज्योति और शक्ति को प्राप्त किया, उन्होंने शिक्षित लोगों में भाषण दिया। श्रोता इतने प्रभावित हुए कि पूछने लगे, "क्या यह एम. ए. है?" मैंने कहा, "नहीं वह तुम्हारी यूनिवर्सिटी के एम. ए. नहीं हैं। वह तो अंग्रेज़ी भाषा जानते तक नहीं। हाँ उन्होंने हिन्दी भी

देवसमाज में आकर सीखी है।" परन्तु वह लोग यह कहते रहे कि "उनके विचारों की ऊँचाई कमाल है, उनके बोलने का ढंग प्रभावशाली है। वह हमें मन्त्र - मुग्ध कर देते है।"

जिन्हें आपके ज्ञानरूपी सागर में कुछ अधिक डुबकी लगाने का अवसर मिला है, "वह अनुभव करते हैं कि आपके अत्यंत ज्योतिर्मान करने वाले साहित्य में गहरी डुबकी लगाकर उन्होंने मनुष्य के सबसे बड़े अधिकार तथा गौरव का बोध प्राप्त कर लिया है।

- पी.वी. कनल

देवात्मा के दर से क्या पाया?

मैं सरताज सिंह S/o मनजीत सिंह बाजवा गाँव केसूपूरा, सिरसा, हरियाणा। मुझे देव समाज में आए लगभग 23 - 24 साल हो चुके है। मुझे इस दर (देवसमाज) का रास्ता दिखाने वाले श्री सुखदेव जी जोसन हैं। मैं और मेरा दोस्त सुखदेव मिरोक दोनो इक्ट्ठे देव समाज के मैम्बर 1997 - 98 में बने थे, जब देव समाज का सालाना उत्सव 18 D शुभवती धर्मशाला हुआ करता था। हम दोनों जवान थे व अविवाहित। देव समाज का मैम्बर बनने से पहले श्री बलबहादुर सिंह जी ने हमारे सेवकी में ग्रहण का फार्म (Form) भरवाया था। तब मुझमें देव समाज के बानी व गुरू महाराज के प्रति उतना आकर्षण व प्रेम नहीं था जितना आज है। शायद उतनी समझ - अक्ल व सोझी भी नहीं थी। हम दोनों दोस्त तो बस सुन्दर चण्डीगढ़ शहर घूमने आए थे। 4 - 5 वर्ष तक हम सभा बीच में छोड़कर कभी बाजार तो कभी सिनेमा तो कभी मार्किट घूमने चले जाते थे। लेकिन देव समाज की किताब पढ़ने व खरीदने का दौर चलता रहा। धीरे - धीरे जीवन में परिवर्तन आना शुरू हो गया। सबसे पहले माता - पिता के बारे में परिवर्तन आना शुरू हुआ। मेरी माता जी भैंसों के गोबर सर्दियों में उठाया करती थी। मैं 1999 - 2001 में देव समाज के महोत्सव को सुनकर नया - नया वापिस घर लौटा था। गुरू महाराज की शिक्षाओं व माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्री बलबहादुर सिंह जी की सभाओं के असर ने मुझे धिक्कारा कि तू जवान है और माँ गोबर उठाती है, चल उठ गोबर उठा। दूसरा भाई भी मेरा जवान था। फिर क्या था, लग गया मैं गोबर उठाने। माँ ने बहुत रोका तू M.A. तक पढ़ा लिखा है। गाँव के लोग क्या कहेंगे, रहने दे। मैंने एक ना मानी, उठाता रहा खुशी - खुशी जादू हो गया था मेरे उपर। पढ़ाने के धीरे - धीरे ढंग बदलने लगे। पहले छात्रों (Student) को मैं बहुत पीटता था, गाली निकाल देता था। परन्तु श्री P.V. Kanal Ji की जीवनी व देव समाज की सभाएं सुनने के बाद सारे व्यवहार बदल गए। बच्चों को ज्यादा समय देना, प्यार से समझाना सहायता करना, छुट्टी के बाद भी पढ़ाना शुरू कर दिया। खुद के English के नोटस तैयार किए। सिर्फ देव समाज की रंगत थी कि जवान लड़कियों को English की टयूशन उनके घर में जाकर भी चरित्र पर कभी आँच नहीं आने दी। लोग मेरे

चरित्र पर यकीन करने लगे व मेरे पास टयूशन पर बच्चों की संख्या बहुत ज्यादा बढ़ने लगी जिसमें मेरा साथ मेरे दोस्त सुखदेव मिरोक जो मेरे पड़ोसी हैं, ने भी पूरा दिया। मेरे पिता जी सिक्ख धर्म में गहन विश्वास व प्रेम रखते थे। वे देव समाज में मेरे जाने का पूर्ण विरोध करते थे।

(1) 2005 या 2006 का महोत्सव नज़दीक आ रहा था। मैंने उनका दिल जीतने व नाराज़गी दूर करने का नया तरीका निकाला। मैं उनकी निजी सेवा में जुट गया। उनके पैर दबाना, मालिश करना, उन्हें कोई न कोई उपहार खरीद कर देना शुरू कर दिया। महोत्सव से पहले वे इतने खुश हो गए कि एक दिन बोले कि "तेरा गुरू सचमुच सच्चा व महान है, तू खुशी खुशी चण्डीगढ़ जा मुझे कोई ऐतराज नहीं है।"

(2) इमानदारी का भाव गहरा होता गया। एक दफा पिता जी ज्यादा बीमार हो गए व आर्मी हस्पताल बठिण्डा में दाखिल थे। मैंने बाईक (Bike) सिरसा रेलवे स्टेशन पर छोड़ी व जान बूझकर Parking में पीछे खड़ी कर दी कि 5 रूपये की पर्ची ना कटवानी पड़े। परन्तु इस घटना के 2 साल बाद मैं और होशियार सिंह (सुखदेव जी लण्डन के भाई) सोलन पर्वत आश्रम जा रहे थे। उसी सिरसा रेलवे स्टेशन से गाड़ी लेनी थी। उसी पार्किंग वाले के पास गया व उसे जेब से 10 रूपये निकालकर 5 रूपये पर्ची के व 5 रूपये हानि परिशोध के रूप में दिए। वह हैरान होकर बोला, वाह! भाई क्या बात है।

(3) मैं और मेरी पत्नी एक बार सिरसा गए हुए थे। मैंने नया नया मोबाईल फोन खरीदा था। मैं कहीं 2-3 मिण्ट के लिए वहाँ से गया। मोबाइल फोन मेरे बेटे ने ले लिया। गल्ती से उनसे मोबाईल फोन सड़क पर गिर गया। मैने तड़ाक से पत्नी को थप्पड़ दे मारा। वो बेचारी खामोश रही व बोली कुछ नहीं। मुझे बाद में उस घटना का बहुत अफसोस हुआ। आज मैं अपनी पत्नी से गहरे मन से उस घटना के लिए माफी माँगता हूँ।

(4) पैसा सभी को प्यारा लगता है। गीता में भी लोभ का जिक्र किया गया है। लेकिन देव समाज में आने के बाद पिछले 17-18 वर्षों में मैंने कितने ही जरूरतमंद बीमारों व रिश्तेदारों को पैसे से मदद की व पैसे को इक्ट्ठा नहीं किया। एक बच्चे की शादी का पूरा खर्च उठाया। एक लड़की की शादी पर मोटरसाइकिल खरीदकर दी। एक बीमार को MRI इलाज व दवा का सारा खर्च दिया। दो दिन उसके साथ रहा। अपने दोनों स्कूल पार्टनरों को एक-एक बड़ा गिफ्ट देकर खुशी हासिल की। एक जरूरतमंद जिसके मकान का लैन्टर डलने वाला था उसे 50,000 रूपये देकर उस काम में मदद की या यूं कहें गुरू महाराज के असरों ने मेरे हाथों से करवाई। क्या यह जादू नहीं।

(5) ईमानदारी का भाव खेड़ा साहिब के पिता जी श्री प्रेमबल खेड़ा की जीवन चरित्र "शून्य से शिखर तक" व P.V. Kanalji की Autobiography My Story को पढ़कर और ज्यादा दृढ़ हो गया।

(6) सैर जाने लगा। दातून करने लगा। बड़ों का सम्मान करने लगा।

(7) एक धर्म सम्बन्धी की पैसे से व उनके

घर जाकर व साहस बंधाकर पूरी - पूरी सहायता की।

(8) गुस्से व घमण्ड का पता चलने लग गया। Kanalji की घमण्ड की खाईयां (Fit falls of Vanity) खुद पढ़ी, स्कूल में बच्चों को पढ़ाने लग गया। थोड़ा गुस्सा व घमण्ड दूर भी हो गया।

(9) Principal Smt सुरजीत बराड़ जी का एक लेख 2014 के धर्म जीवन में छपा जिसका सिरलेख (Heading) "आओ एक वादा करें" पढ़ा जिसमें Bathroom (स्नानघर) की सफाई व रसोई की सफाई के बारे में व दिवाली की बजाए रोजाना घर की चीज़ों को साफ सुथरा रखने का बड़ी अच्छी तरह से जिक्र किया गया था। उसने मेरी जिन्दमी में बहुत अच्छा परिवर्तन ला दिया। लेख की फोटोकापी (Photostat) करवाकर अपने साथी अध्यापकों को दी। बच्चों को पढ़ाई।

(10) प्रिंसीपल रहकर भी बच्चों को छुट्टी के बाद पढ़ाना। नीति शिक्षा करवाना। शिष्टाचार की शिक्षा देना, Prayer से पहले पढ़ाना व स्कूल में बिस्तर लगवाकर Final Exam से पहले उनके साथ सोना, पढ़ाना व उन्हें चाय बनाकर सुबह देने की सेवा करने लगा। यह गुरू महाराज वा देव समाज की सभाओं का ही करिश्मा था।

(11) हाँ अभी भी घमण्ड व गुस्से की गिरफ़्त में हूँ, परन्तु उम्मीद करता हूँ कि गुरू महाराज की कृपा व देव प्रभाव मिलने से मेरे जीवन में भी और शुभ परिवर्तन आएगा।

मेरे पापों की क्या है गिनती

कितना अन्धेरा है और कितने अन्धेरे में हमें रखा और ले जाया जा रहा है। एक तरफ ऐसे हिताकांक्षी और मार्गदर्शक जो सभी को अपने अपने उपकारियों के सुन्दर रूप को दिखाते और समझाते हैं, उनके आगे झुकने की प्रेरणाएँ देते हैं।

मिथ्याओं, वहमों भ्रमों को तोड़ते हैं.... सच पर आरूढ़ रहने की प्रेरणाएं देते हैं और एक तरफ हमारे ऐसे भी मार्गदर्शक हैं जिनके द्वारा हम बहुत प्रसन्नचित हैं क्योंकि वह हमें मान, बढ़ाई, इज्जत, प्रशंसा आदि से फलीभूत करते हैं..... हमारी गलतियों को अनदेखा सा करते दिखते हैं..... हमें अन्दर और बाहर से हमारी जैसी कुछ भी अवस्था है, उसको सहलाकर उसी की घोषणा करके हमें खुश व बागोबाग रखते हैं.....

उन्हें हम मनुष्यों की अदना, प्रकृति का बखूबी ज्ञान है कि जब हमें सुन्दर व श्रेष्ठ साबित किया जाएगा तभी हमारे अहं को चोट नहीं लगेगी व हम खुशी - खुशी उनके पीछे चल पढ़ेंगे।

भले ही हमारा घमण्ड बढ़े, भले ही हमारा स्वार्थ हमें न दिखे हमें उससे क्या सरोकार..... हम तो प्रसन्न भी तभी रहते हैं जब हमारे मन को सुख मिले भले ही उसके लिए शुभ चला जाए... आत्मा का हित चला जाए.....

हमारा आत्मा से क्या सरोकार.....

गुरू शिक्षा से उपजी तड़प

- एक तुच्छ सेवक द्वारा

मेरे पापों की क्या है गिनती
मेरे गुनाहों की कहां है पार (हद),
सिर्फ अपने सुखों का मैं हूँ पुतला,
सिर्फ अपने से ही मुझको है प्यार।
ना जाने किस - किस को है लताड़ा,
कितने अपनों को किया रूस्वा ख़्वार
जिन्दगी मैने अपनी डुबोई,
अन्धेरा इतना कि नैया हो कैसे पार,
नीचता ने बहुत था दहाड़ा
हाय! अपनों को ही मैंने पछाड़ा,
किया दिल का मैंने मैला कोना - कोना
गुरू किस विधि करो उद्धार
(अपने गुनाहों की याद से तड़प)
- गोपाल कृष्ण

अपनी पत्नी को श्रद्धांजली

जैसे कि आप लोगों को पहले सूचित किया था कि हमारे माननीय धर्म सम्बन्धी श्रीमान जगजीत सिंह जी की धर्म पत्नी का 16 फरवरी को देहान्त हो गया था उनके सम्बन्ध में श्राद्ध की सभा 5.3.23 को लुधियाना में माननीय श्रीमान यशपाल जी भल्ला ने करवाई। उसमें और धर्म सम्बन्धियों के अतिरिक्त माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भी हाज़िर थे उनकी श्रीमान जगजीत सिंह जी की पत्नी की 10 फरवरी को अचानक तबीयत खराब हो गई, और वह अपनी बीमारी से उभर न सकीं। 17 फरवरी को बहुत सम्मानपूर्वक उनका दाह संस्कार किया गया।

श्रीमान जगजीत सिंह जी लिखते हैं। उनके दाह संस्कार, अस्थियां विसर्जन करने आदि सभी क्रियाएं गुरू की कृपा से मैंने स्वयं पूरी की। गुरू के बल से ही मैं सदमें में भी यह सब कर सका। मुझे गुरू की कृपा ने इतना बल प्रदान किया कि बहुत सम्मान पूर्वक उन्हें आख़िरी विदाई दी।

उनमें बहुत सद्गुण थे। उनका बड़ा अच्छा दिल था। सबके साथ बहुत अच्छा व्यवहार था। बहुत सूझवान थी, घर को सूई से बनाने वाली थी। बहुत संयमी और बहुत सूझ बूझ से घर को संवारती थी। परिवार को बहुत सुव्यवस्थित ढंग से संभालती थी। धार्मिक रूचि रखती थी। बड़ों के लिए सम्मान और छोटों के लिए बहुत प्यार भरा दिल था। पारिवारिक ज़िम्मेवारियों को बहुत अच्छे ढंग से निभाने वाली शख़्सीयत हमसे सदा के लिए बिछुड़ गई। बहुत दुख है। मैं कोई फरिश्ता नहीं, पत्थर दिल भी नहीं, बार 2 भावुक हो जाता हूँ। उनकी याद कभी नहीं भूलेगी।

देव समाज के कर्मचारियों का बहुत सम्मान करती थी। विशेषकर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, डाक्टर नवजोत जी, श्रीमान जवाहर लाल जी और नवनीत जी को याद करती थी। उन सब को अपने परिवार के सदस्य ही समझती थी। 1984 - 2021 तक हर वर्ष महोत्सव पर हाज़िर होती रही हैं।

मेरे निजी जीवन में हमने इक्ट्ठे 49 वर्ष 5 महीने व्यतीत किए हैं। बहुत उतराव - चढ़ाव आए, गरीबी के दिनों में भी नहीं घबराई। कहती थी कि सुख मिले या दुख मिले, झोली विच पावांगी। पूरी वफादारी से मेरा साथ निभाया। उनकी याद कभी नहीं भूलेगी। उनके जाने का घाटा पूरा नहीं हो सकता।

उनकी अन्तिम इच्छा थी कि उनके

अकाउंट में 10 - 12 लाख रूपये हैं, उनका सदुपयोग किया जाए। गरीब बच्चियों की पढ़ाई पर खर्च किया जाए। उसके ब्याज से यह खर्च किया जाए। उनका यह वायदा पूरी तरह निभाया जाएगा।

परलोक में उनकी आत्मा को शान्ति मिले। परिवारिक जनों को धैर्य मिले, इस बिछोड़े को सहने की शक्ति मिले।

मैं श्रीमान यशपाल जी भल्ला का विशेष रूप से धन्यवाद करना चाहूंगा। जिन्होंने अपनी इच्छा से श्राद्ध की सभा का आयोजन किया। बाद में सब को अपनी तरफ से चाय, पानी और खाना आदि खिलाया। मैं उनको दिली भावों से धन्यवाद देता हूं।

जगजीत सिंह, लुधियाना
99156 - 55055

एक पत्र

"दिल से जब बात निकलती है तो असर रखती है पर वही पर ताकते परवाज रखती है। सन्मान के योग्य श्रीमान जी सतदेव की जय। श्रीमान जी देव समाज के साथ मुझे जोड़ने में आपका बहुत बड़ा योगदान रहा है मैं बड़ा शर्मिन्दा हूँ कि इस इतने बड़े उपकार को मुझे बहुत पहले महसूस करना चाहिए था। काश! ऐसा होता पर पिछले दो साल से मैं आपके उपकार याद करता रहता हूँ और कई बार शुभकामना भी करता हूं और मैं यह भी महसूस करता रहता हूँ कि हम आज तक मिशन के कोई ज्यादा काम भी नहीं आ सके। अब कोशिश कर रहा हूँ कि मैं तन, मन व धन से मिशन के काम आ सकूं।

किसी ने अकाऊंट में गडबड़ी की है या कोई आपको दोष दे रहा है इस सब में हमारा भी दोष है क्योंकि हम आपके काम ही नहीं आए, न ही हमने आपका साथ दिया। आपने तो किसी न किसी पर भरोसा करना ही था। उसका नतीजा तो हम सब ने देखा जिम्मेंवार तो हम भी हैं। आप अकेले रहे। आपने अकाऊंट में पैसे जमा करवा कर एक मिसाल पैदा की है जो आप ही कर सकते हैं मेरा तो सिर आपके चरणों में झुक रहा है। मेरे पास शब्द नहीं है आपका शुक्रिया कहने के लिए। काश! आप पर इल्जाम लगाने वाले भी इससे कुछ सबक ले सकें। उनका भी भला हो। आपका तो भला होगा ही होगा। एक बार फिर दिल की गहराईयों से शुक्रिया मेहरबानी।

आपका तुच्छ सा साथी सेवक
जसविन्द्र सिंह मल्लेका

मेरे विशेष श्रद्धा और सम्मान के योग्य श्रीमान जी सत्यदेव की जय।

आप मेरे और मेरे परिवार के बहुत बड़े उपकारी हैं। आप ने सालों के साल मेहनत करके गुरू महाराज का संदेश हम तक पहुंचाया है। आज डॉ. नवजोत जी ने मुझे group में आपके संबंध में message डालने को कहा, मेरा सिर झुक रहा था कि किसी की गलती का परिशोध आप कर रहे हैं।

आपका एक एक बार का आशीर्वाद ही मेरी सारी निराशा को दूर करता रहा है। इस बात से मेरे अंदर गुप्त रूप से असर हुआ है कि मुझे भी अपने सतगुरु के मिशन में काम आना चाहिए, इसी में मेरे जीवन की रक्षा और विकास है। काश! मेरे जीवन की शक्तियां इसी दिशा की ओर चल सकें।

आपका तुच्छ साथी सेवक,
- गौतम

विशेष सत्संग और पति पत्नी व्रत

विशेश सत्संग और पति पत्नी व्रत देव समाज साधन मन्दिर मल्लेका (सिरसा) में 17, 18, 19 मार्च 2023 ई. को मनाया गया। इसमें शामिल होने के लिए धर्म संबंधी डेराबस्सी, कल्याण, बठिंडा, गोनियाना, श्री गंगानगर, गजसिह पुर, पटियाला आदि स्थानों से पधारे। सभाएं माननीय श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, पं० राधेश्याम जी और श्रीमान सरताज जी ने करवाई। भजनों का गान श्रीमान गुरदेव राज और गौतम जी करते रहे।

17.08.2023, शाम 5.00 बजे, सभापति :श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने सबसे पहले यात्रियों का स्वागत किया। सभापति जी ने फरमाया कि दुनियां में पूजा, पाठ, नाम जपने को धर्म समझा जाता है। देव समाज के बानी ने धर्म को विज्ञानमूलक आधार दिया है। वेदांत मानता है कि दुनिया और उसके सारे संबंधी माया हैं। वास्तव में वह है ही नहीं। इस बात को परीक्षा के आधार पर सच्चा नहीं माना जा सकता। अगर ऐसा हो तो शूगर वाले को मीठा छोड़ने की जरूरत नहीं है। हमें नेचर के नियम अपनी हस्ती के विषय में जानने हैं। हमारे संबंध वास्तव में हकीकत रखते हैं। संबंधों के बिना हम रह नहीं सकते। संबंधों में अच्छे व्यवहारों का नाम धर्म है। पति पत्नी के संबंध में भी गुरू महाराज की शिक्षा अद्वितीय है। उसमें बताया गया है कि पति पत्नी एक दूसरे का उचित सम्मान करें। एक दूसरे के गुणों का विकास करें। सभापति जी ने S.P. कनल जी और उनकी धर्म पत्नी का दृष्टांत दिया। उन्हें भी कैसे एक सभा में इस पक्ष में क्या रोशनी मिली थी उसका वर्णन किया। सभा के अंत में श्रीमान गुरदेव राज जी ने यात्रियों के स्वागत में गीत गाया।

18.03.2023 सवेरे 9.00 बजे, सभापति : पं० राधे श्याम जी। सभापति जी ने सबसे पहले नेचर की परिभाषा बताई कि जड़ और शक्ति से बने हुए सब प्रकार के छोटे और बड़े जीवित और अजीवित अस्तित्त्वों के समूह का नाम नेचर है। नेचर सदा से हैं और सदा रहती है इसे बनाने वाला कोई नहीं है। सभापति जी ने Lemarck, Darwin और Hugode vries के सिद्धांतों की व्याख्या करते हुए विकास के नियमों को समझाया। श्रद्धा, कृतज्ञता के विषय में बताया। सभापति जी ने अपनी धर्म पत्नी जी के मांसाहार के प्रति उच्च घृणा का बयान किया। अच्छे भाव त्याग करवाते हैं। उच्च भाव ही मुख्य होते हैं। नीच भाव संबंधों को नुकसान करते हैं। सभापति जी ने माता पूजनीय श्रीमती लीलावती जी की कुछ हितकर घटनाओं का वर्णन करते हुए पूजनीय भगवान की उनके प्रति सेवाओं का वर्णन किया।

शाम 4.30 बजे। सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। वक्ता : श्रीमान सरताज सिंह जी। सभापति बलबहादुर सिंह जी ने फरमाया कि दुनियां में सब अच्छा बुरा, पाप, पुण्य आदि संबंधों में है। "जो कुछ नहीं जानता और यह भी नहीं जानता कि मैं नहीं जानता वो मूर्ख है।" यह एक विचारशील का कथन है। सभापति जी ने एक घटना बताते हुए फरमाया है कि पत्नी के व्यवहारों से तंग आकर पति ने आत्महत्या कर ली क्योंकि पत्नी में दया और कृतज्ञता नहीं थी। एक सेठ ने जिसकी पत्नी ने उसकी अंधे होने

की अवस्था में सेवा की थी उसने बेवफाई की। इसके बाद माननीय वक्ता श्रीमान सरताज सिंह जी ने पति पत्नी के संबंध में अलग - 2 उदाहरण दिए। उन्होंने बताया कि हम पैसे, जायदाद आदि के संबंध में गुण तो देख लेते है पर जो हमारे उच्च भावों का विकास होता है उसे नहीं देखते।

19.03.2023, सवेरे 9.00 बजे :- सभापति : श्रीमान राधे श्याम जी। देव स्त्रोत के गान और पति पत्नी के संबंध में भगवान द्वारा रचित गीत के गान के बाद सभापति जी ने देव शास्त्र खण्ड चौथे से पति पत्नी के संबंध में आदेशों का पाठ किया। सभापति जी आदेशों के पाठ के साथ साथ उदाहरण देकर उनको स्पष्ट भी कर रहे थे। सभापति जी ने एक घटना बताते हुए फरमाया कि कैसे एक पत्नी को देव ज्योति में अपना बुरा व्यवहार नजर आया। सभा बहुत प्रभावशाली और हितकर थी।

भाव प्रकाश

1. गोल्डी जी पटियाला ने पहली मई तक शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

2. श्रीमान गोपाल जी सभाओं में बहुत प्रेरणाएँ मिली है स्वर्गीय आनन्द आता रहा। अपनी पत्नी का सच्चा भला करने की कोशिश करूँगा।

3. श्रीमान सुखदेव सिंह जी मल्लेकां गुरू महाराज के चरणों में आकर पति पत्नि के संबंध में हितकर मेल आया है। पहले पत्नी पर थानेदारी करते रहे हैं। अब तूँ कहने में परहेज करता हूँ। घर में हम सभी एक दूसरे को तूँ नहीं कहते।

4. श्रीमान ज्ञान चंद जी गोनियाना मेरी धर्मपत्नी अच्छे खानदान से हैं। और मेरे से अधिक पढ़ी हैं। वो बीमार हैं मैं उनकी सेवा करूँगा। (श्रीमान ज्ञान जी की धर्म पत्नी जी बीमार हैं श्रीमान ज्ञान जी उसकी सेवा करते हैं जिसको वह बहुत महसूस करती हैं। यह सब गुरू महाराज के प्रभावों का कमाल है कि वो इन्सान को जमीन से उठाकर आसमान तक पहुँचाते हैं।)

5. श्रीमती दविन्द्र कौर जी मेरे पति जी अच्छे है। वे मेरा बहुत ख्याल रखते हैं। बहुत थोड़े पैसों में भी बहुत अच्छा गुज़ारा करते रहे हैं। सासू माता जी के संबंध में गल्ती नहीं करूँगी।

6. श्रीमती प्रीतम कौर जी उम्र बहुत हो गई है। जिम्मेवारियों की वजह से पीछे रह गई हूँ। अपने बेटे के लिए मैं बहुत खुश हूँ कि उन्होंने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की है। अपने बेटे को अपनी पत्नी के लिए भी व्यवहार सुधारने की प्रेरणा दी। गुरू महाराज का दर सबसे निराला है। सारे इस दर से जुड़ें।

7. श्रीमान बलबहादुर सिंह जी उन्होंने गोल्ड़ी जी के भावों के विषय में बताया। एक नौजवान को अपनी पत्नी की Respect के विषय में बताया।

8. श्रीमान गुरदेव राज जी मेरी श्रीमती जी धार्मिक परिवार से आई हैं। अपने बच्चों के सबंध में मेरी धर्म पत्नी जी का ख्याल है कि मेरे बच्चे बाहर जाकर शराबी कबाबी न बन जायें। मेरी पत्नी जी के हाथ में चोट लग गई थी अब भी हमारी, उसी हालत में सेवा करती हैं। सेवा का भाव इनमें बहुत ज्यादा है। पहले हम एक दूसरे को प्रणाम नहीं करते थे अब हम सवेरे उठ के

Published on 5th of the month

Regd. Postal No.CHD/0077/2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

सत्य देव की जय करेंगे।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सिद्धान्त दर्पण पुस्तक के इम्तिहान के बारे में ऐलान किया। उनके नाम इस प्रकार हैं :-

(1) श्रीमान गोपाल जी
(2) श्रीमान गौतम जी
(3) श्रीमान जसविन्द्र जी
(4) श्रीमती प्रीतम कौर जी

सभा के अन्त में। सभापति जी ने इस सारे प्रोग्राम की सम्पूर्णता के लिए सब धर्म सम्बन्धियों, सहायकारी शक्तियों और गुरू महाराज के लिए धन्यवाद का प्रकाश किया। सभी सभाओं में अच्छा वातावरण बनता रहा, कई धर्म सम्बन्धी उच्च प्रेरणा लाभ करते रहे व धन्य धन्य होते रहे। 6150 रूपये दान प्राप्त हुआ।

मल्लेका मन्दिर के लिए जो दान इक्ट्ठा हुआ है वह इस प्रकार है।

1. श्रीमान बलदेव सिंह एण्ड फैमली	50,000
2. उनके बेटे डा. देव अनुरूप बराड़ ने भेजने का वायदा किया, वह अमरीका जाकर भेजेंगे इसके इलावा उन्होंने एक Innova Toyot अपनी (Company) कम्पनी की गाड़ी प्रचार के लिए दे दी।	8,00,000 (10000 डॉलर)
3. श्रीमान मनसा सिंह जी	50,000
4. श्रीमान ज्ञान चन्द जी	30,000
5. श्रीमान अवतार सिंह जी	30,000
श्रीमान अवतार सिंह जी ने	(20,000 रू और देने का वायदा)
6. श्रीमान जगजीत सिंह जी	10,000
7. डॉक्टर जयरथ जी	10,000
8. श्रीमान जसविन्द्र जी	10,000
9. श्रीमान मधू सूदन जी	2,000
10 श्रीमान दूनी चन्द जी	5,000
11 पी. सी. दीवान जी	1,000
12 श्रीमान खेमचन्द जी	1,000

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री- **Dev Samaj Global**, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts